जॉयस मेयर

भ्रम से कैसे छुटकारा पायें

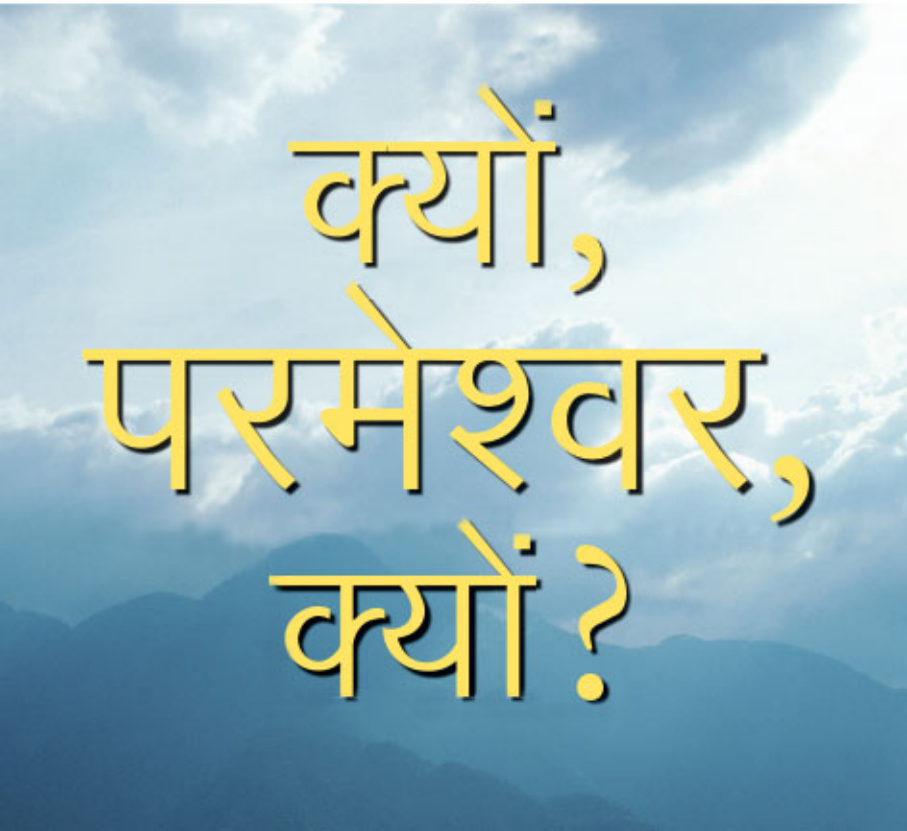

क्यों, परमेश्वर, क्यों?

क्यों, प्रभु, क्यों ?

भ्रम से कैसे छुटकारा पायें

क्यों, प्रभु, क्यों ?

भ्रम से कैसे छुटकारा पायें

जॉयस मेयर

JOYCE MEYER MINISTRIES®
Nanakramguda, Hyderabad - 500 008

Unless otherwise indicated, all Scripture quotations are taken from The Amplified Bible (AMP). The Amplified Bible, Old Testament copyright © 1965, 1987 by The Zondervan Corporation.
The Amplified New Testament, copyright © 1965, 1958, 1987 by The Lockman Foundation. Used by permission.

Scriptures marked KJV arae taken from the *King James Version* of the Bible.

Copyright © 2014 by Joyce Meyer Ministries - Asia

All rights reserved. No part of this publication may be reproduced, distributed, or transmitted in any form or by any means, or stored in a database or retrieval system, without the prior written permission of Joyce Meyer Ministries - Asia.

Joyce Meyer Ministries - Asia
Nanakramguda,
Hyderabad - 500 008

Phone: +91-40-2300 6777
Website: www.jmmindia.org

Why, God, Why? - Hindi
How to Be Delivered from Confusion

Printed at:

Caxton Offset Pvt. Ltd.
Hyderabad - 500 004

विषय-सूची

प्रस्तावना	7
1. गड़बड़ी का कारण क्या है?	9
2. "तर्कों" से मुक्ति	13
3. विश्वास का रवैया	15
4. अनुग्रह हर दिन को हिसाब से आता है	17
5. यदि केवल	21
6. क्या हो यदि?	25
7. अपने दिमाग के पीछे मत जाओ	29
8. "तर्क" छलता है	35
9. गड़बड़ी आपका आनंद छीन लेती है	41

प्रस्तावना

युहन्ना 10:10 (विस्तारित बाइबल) कहता है कि चोर किसी और काम के लिये नहीं परन्तु केवल चोरी करने और घात करने और नष्ट करने को आता है। यीशु इसलिये आये कि आप जीवन पायें और बहुतायत से पायें।

शैतान आपका आनंद चुराना चहता है और इस तरह जीवन के आनंद से वंचित करता है। परन्तु मेरी प्रार्थना है कि ये पुस्तक आपको यह सिखाने में सहायक होगी कि किस तरह आप "परमेश्वर को परमेश्वर" बनायें अपने जीवन में, ताकि आप उस शांति और आनंद की बहुतायत का आनंद ले सकें जिसे आपको प्रदान करने के लिये यीशु को बलिदान देना पड़ा।

1

गड़बड़ी का कारण क्या है?

क्या आप गड़बड़ी में है? क्या इस समय आपके जीवन में कुछ ऐसा हो रहा है जिसे आप समझ नहीं पा रहें। शायद ये आपका अतीत हो, और आप समझ नही पाते कि क्यों आपका जीवन ऐसा था शायद आप कह रहे हो, "मैं ही क्यों प्रभु? मेरे साथ हालात ऐसे क्यों न हुये या वैसे क्यों न हुये वे ऐसे क्यों हुये? जैसे मुझे झेलने पड़े? मैं बस समझ नहीं पा रही!"

मुझे समझ आने लगा कि बहुत से लोग बहुत बुरी तरह गड़बड़ी के शिकार हैं। मैने अतीत में स्वंय अनुभव किया था और जानती थी कि कैसे गड़बड़ी लोगों को सताती है और मैं सोचने लगी कि लोग गड़बड़ी में क्यों पड़ते हैं और इससे बचने के लिये वे क्या कर सकते हैं।

एक रात मैं कैनसास शहर में एक सभा कर रही थी और लगभग 300 लोग उपस्थित थे। मुझे लगा कि मैं पुछू कि इस समय कितने लोग किसी न किसी मुद्दे के कारण अपने जीवन में गड़बड़ी के शिकार

हैं। मुझे आश्चर्य हुआ कि सिर्फ दो ही व्यक्ति मुझे दिखे जिन्होने हाथ खड़ा नहीं, और उनमें से एक थे मेरे पति।

यदि मैंने सही देखा तो मतलब यह हुआ कि 300 में से 298 लोग गड़बड़ी में थे। यह लगबग 99.3 प्रतिशत है। जैसे जैसे मैने विभिन्न समूहो में जांचना शुरु किया तो मुझे पता चला की हर जगह यही मामला है। बेशक प्रतिशत अलग अलग थी पर काफी अधिक थी।

जब मैने इस पर विचार किया और प्रभु से पूछा कि मुझे बतायें कि गड़बड़ी क्यों होती है, उन्होने कहा *"उनसे कहो कि हर बात पर तर्क वितर्क छोड़ दें, और वे गड़बड़ी से छूट जायेंगे।"* अब मुझे समझ आया इसी से तो मैं भी अब गड़बड़ी का शिकार नहीं होती। अभी भी मेरे जीवन में बहुत सी बातें हैं। जिन्हे मैं समझ नहीं पाती, पर अब एक बहुत बड़ा अंतर आ गया है। *परमेश्वर* ने मुझे हर बात का तर्क जानने से मुक्त कर दिया है। *परमेश्वर ने मुझे तर्क से मुक्त कर दिया है।* (इसी तर्क की बात की गई है द्वितीय कुरिन्थियों 10:5 में) इसलिये मेरे जीवन में जो बातें मुझे अब समझ नहीं आतीं उन्हे समझने की मैं कोशिश नहीं करती।

ये बहुत आसान लगता है, है न? पर गड़बड़ी के अत्याचार से पूरी मुक्ती मिल जाती है यदि बात के पीछे का तर्क समझने के लोभ से हम छुटकारा पा लें। यदि आप सचमुच रुक कर इस पर सोचें तो इसका कोई मतलब नहीं निकलता क्योंकि ये सब उस क्षेत्र में उथल पुथल मचाता है जिसे कहते हैं 'मन'!

मन जंग का वह मैदान है जहाँ शैतान से हमारी जंग या जीती या हारी जाती है। परमेश्वर का कर्ता (1 कुरिन्थियों 14:33) शैतान है। शैतान हमें देता है सिद्धांत और तर्क जो परमेश्वर के वचन से मेल

नहीं रखते। द्वितीय कुरिन्थियों 10:4,5 (विस्तारित बाइबल) में लिखा है। हमें एक प्रकार की सोच को हटाना होगा यदि हमें युध्द जीतना है जो है तर्क। और वचन में लिखा है:

> "क्योंकि हमारी लड़ाई के हथियार शारीरिक नहीं (यानी मांस और लहु के हथियार) पर गढ़ों को ढा देने के लिये परमेश्वर के द्वारा सामर्थी है, सो हम (जितना चाहें उतना ज्यादा) कल्पनाओं को, और हर उँची बात को, जो परमेश्वर की पहिचान के विरोध में उठती है, खण्डन करते हैं, और हर भावना को कैद करके मसीह का आज्ञाकारी बना देते हैं। (मसीह जो अभिषिक्त है)"
>
> 2 कुरिन्थियों 10:4,5

यदि वचन हमें निर्देश देता है कि बातों का तर्क जानने की कोशिश न करें, तब हमे आज्ञा माननी होगी। और जब तर्क मन में आता है, तब हमें अपने विचार मसीह की आज्ञाकारिता की ओर लगाने चाहिये। ये शास्त्र वचन कहते है कि हम युद्ध कर रहें हैं और हमारे हथियार हमारे युद्ध ज्यादातर दिमागी जंग है। शैतान हमारे दिमागों पर आक्रमण करता है।

इन शास्त्र वचनों के अनुसार, हम उसके ये आक्रमण झेल रहे हैं अपनी कल्पनाओं द्वारा। क्या कभी आपने ऐसी बातों की कल्पना की है जो सच नहीं या अपने मन के पटल पर ऐसी बातों के चित्र देखें जो आप जानते है कि सही नहीं है? सिद्धांत वे योजनायें और विचार हैं जो बतायें कि अपनी समस्यायें कैसे सुलझायें, और तर्क है अपने मन में विचार किये जाना उन प्रश्नों के उत्तर पाने की कोशिश में जो केवल परमेश्वर के पास ही है।

इस अध्याय के अंत में, चलों ये कहे कि गड़बड़ी पैदा होती है उस बात का समझाने या प्रश्न का उत्तर खोजने की कोशिश में जो केवल परमेश्वर ही जानते हैं। किसी कारण, यह केवल वही जानते हैं, और वह बता नही रहे।

2

"तर्कों" से मुक्ति

पहले आपको समझना पड़ेगा कि मेरा मन कैसा था ताकि आप सचमुच तर्कों से मेरी मुक्ति को समझ सकें।

जीवन की शुरुआत में ही मैने निष्कर्ष निकाल लिया कि किसी पर आश्रित नहीं रहना, स्वतंत्र रहना और अपनी देखभाल स्वयं करनी है, यही सबसे सुरक्षित और अच्छी धारणा है। मैने यह समझ लिया था कि मैं जितनी कम किसी से मदद मागूँगी, मैं अपने जीवन में उतनी ही बेहतर रहुँगी, क्योंकि किसी बात के लिये किसी का भी अहसान मुझ पर नहीं होगा। मैं चोट खा खा कर तंग आ गई थी और सोचा इस प्रकार का रवैया मुझे दुख से बचायेगा।

बेशक मैं गलत थी, पर मुझे ये समझने में बहुत अर्सा लगा और इसे स्वीकारने में भी। क्योंकि इसमें बहुत समय लगा, मैंने वो साल बिताये चिंता में, तर्क में, अनुमान में, सिद्धांतों में, कल्पनाओं में, क्रोध में, हताशा में, परेशानी में और यूं ही ये सूची बढ़ती जाती है। हम जितना स्वालंबी हैं उतना ही किसी और पर या परमेश्वर पर भरोसा करना कठिन होता है।

प्रभु चाहते हैं कि हम उन पर आश्रित हों, उनसे स्वतंत्र न हो और स्वयं पर आश्रित न रहें। आप जितना ज्यादा यीशु मसीह पर भरोसा करतें है, आप उतनी ही अधिक वे बातें उन पर छोड़ेगें जिन्हे आप समझ नहीं पाते, ये जानते हुये कि वह जानते है, और जब सही समय आयेगा, वह हम पर ये प्रकट कर देंगें।

इस तरह के रवैये को नकारात्मकता से मत उलझाईये। हमें नकारात्मक नही बनना, कम से कम विश्वास के मामले में तो नहीं। यदि आपके और आपके किसी मित्र के जीवन में कोई घटना होती है और आप बस समझ नहीं पाते कि ये क्या हुआ और क्यों हुआ तब आपको अवश्य ही प्रार्थना से शुरूआत करनी चाहिये। पवित्र आत्मा से मांगिये कि वह आपको समझदारी दें, आपको सिखायें, इस पर प्रकाश डालें और आपको ज्ञान बोध दें, फिर इंतज़ार कीजिये जब तक वह ऐसा नहीं करता, जानते हुये कि परमेश्वर अपने समय अनुसार आपको समझदारी देगा।

जब आपके दिल में प्रश्न उठते हैं तो शायद कुछ देर आप उन पर विचार करें, पर किसी खास पल आप गड़बड़ी में खुद को महसूस करते हैं, बस परमेश्वर का धन्यवाद कीजिये कि उनके पास जवाब है, उन्हें बतायें कि आप इससे संतुष्ट हैं कि वह जवाब जानते है, और उन्हे बतायें आप उन पर भरोसा करते हैं कि समय आने पर वह आपको ये बतायेंगे।

आप कभी भी तर्क और गड़बड़ी से मुक्त नहीं हो पायेंगे जब तक इस रवैये को आप नहीं अपना लेते जिसका मैं वर्णन कर रही हूँ। ये रवैया जिसे कहते हैं, *विश्वास का रवैया।*

3

विश्वास का रवैया

शायद हम विश्वास के एक सिद्धांत का हवाला दें या वह मार्ग जिस द्वारा हमे परमेश्वर में कुछ पाते हैं। इफिसियों 2:8,9 में हम देखते है कि विश्वास के द्वारा अनुग्रह से ही हमारा उद्धार हुआ है। इब्रानियों 11:1 (विस्तारित बाइबल) में लिखा है, "विश्वास आशा की हुई वस्तुओं (हमारी आशाओं) का निश्चय और (हमारे द्वारा) अनदेखी वस्तुओं का प्रमाण है।" हम विश्वास का वर्णन और परिभाषा कई तरह से दे सकते हैं, पर मैं एक बहुत सरल से तरीके को मानती हूँ कि विश्वास को देखें, यहाँ तक कि जांच करें कि हम विश्वास में कार्य कर रहे हैं या नही, यह कह कर कि विश्वास का एक रवैया है।

विश्वास का रवैया हमें विश्राम देता है. इब्रानियो 4:3 में लिखा है हम जिन्होने विश्वास किया, उस विश्राम में प्रवेश करते है। इब्रानियों 4 में यह भी लिखा है जिसने उसके विश्राम में प्रवेश किया है (याद रहे विश्वास विश्राम का प्रवेश द्वार है) उसने भी परमेश्वर की नाई अपने कामों को पूरा करके विश्राम किया। (वचन 10) तर्क श्रम है और हमें गड़बड़ी में डालता है विश्राम नही देता।

विश्वास का रवैया कहता है अपनी सारी चिंता उसी पर डाल दो, क्योंकि उसको तुम्हारा ध्यान है (1 पतरस 5:7) इसमें लिखा है, कि मुझे हर बात जो हो रही है, उसे जानने और समझने की ज़रुरत नही। (लेखक की व्याख्या) अपना समय परमेश्वर को जानने में बितायें यह जानने की कोशिश में नही कि वह क्या कर रहे हैं।

विश्वास के रवैये में चिंता, कुढ़ना या कल के बारे में उतेजना नही होती क्योंकि विश्वास हमें समझाता है कि जहाँ भी जाने की ज़रुरत है कल के अनजाने राह पर, यीशु वहाँ रह चुके हैं। याद रहे, वह वही हैं जो थे, जो हैं और जो आने वाले हैं। वह संसार की स्थापना से पहले भी थे। उन्होने रचना में योगदान दिया। वह आपके जन्म से पूर्व ही आपको जानते थे। उन्होने अपने हाथों से आपको बनाया, आपकी माँ की कोख में, प्रारम्भ में वह न केवल वहाँ थे बल्कि वही आरम्भ हैं, आदि हैं।

समाप्ति का क्या होगा? क्या वह चीज़े शुरु करके छोड़ देते हैं? नहीं! वह उसे जो उन्होने शुरु किया खत्म करते हैं। (इब्रानियों 12:2, फिलेमोन 1:6) वह अंत में वहाँ होंगे, वह स्वयं अंत है, अनादि हैं। मैं इसे कुछ इस तरह कहना चाहुँगी, "वह न केवल आदि और अंत है, आरंभ और अंत है बल्कि बीच का भी समस्त वही हैं।"

मान लें कि यीशु कुछ देर करते हैं। मेरे बहुत से आने वाले कल बाकी है, और आपके भी। मुझे ये जान कर खुशी है और इस ज्ञान से दिलासा है कि कल मेरे लिये जो भी होना है। वह मेरे कल को और मुझे अपने हाथ की हथेली में थामे हैं। (यशायाह 49:16)

विश्वास का रवैया हर दिन एक एक करके जीता है।

4

अनुग्रह हर दिन के हिसाब से आता है

"तर्क" या हमें अतीत में फंसा लेता है या हमें भविष्य की ओर धकेलने का प्रयास करता है, याद कीजिये, बाइबल में लिखा है, "अब विश्वास है" (ईब्रानियों 11:1) यदि आप अतीत में रहने की कोशिश करेंगे जीवन कठिन हो जायेगा। उन्होने स्वयं को नही कहा "मैं महान था" यदि आप भविष्य में रहने का प्रयास करेंगे या इस बात का अनुमान लगाने की कोशिश करेंगे कि कल क्या होगा, जीवन कठिन हो जायेगा। उन्होने स्वयं को यह नही कहा "मैं कितना महान होऊँगा" परन्तु यदि आप एक एक दिन करके जीयेंगे, इस दिन जिस दिन में आप है अब, जीवन बहुत आसान हो जायेगा। उन्होने अवश्य ये कहा "मैं हूँ" (निर्गमन 3:14) अब विश्वास है।

उन्होने तूफान में शिष्यों से कहा था तुम भयभीत क्यों हो? धीरज रखो, "मैं हूँ।" (मत्ती 14:27, लेखक का कथन) क्या आप समझे? यीशु कह रहे थे "मैं हूँ" यहाँ तुम्हारे लिये इस समय, और जब "मैं हूँ" सब कुछ ठीक हो जायेगा। आज के लिये जीओ! बीते कल और

आगामी कल की चिंता आज चुरा लेती है। आपको आज के लिये अनुग्रह प्राप्त हुआ है। कल के लिये अनुग्रह कल तक नही आयेगा, और बीते कल का अनुग्रह खत्म हो चुका है। अनुग्रह सक्षमता है, एक अहसान है और पवित्र आत्मा की शक्ति है कि आपकी सहायता करें वो करने में जिसे करने की ज़रुरत है। हम समय से पहले अनुग्रह नही प्राप्त कर सकते कि उसे समेट कर रख लें, ऐसा नहीं होता।

याद कीजिए, बियाबान में इस्त्राएलियों को परमेश्वर ने अलौकिक ढंग से उन्हे हर रोज खाना दिया स्वर्ग से भोजन बरसा कर। उसे उन्होने कहा "मन्ना।" हमारी तरह ही, वे इस बात के लिये निश्चिंत होना चाहते थे कि कल के लिये भी उनके पास काफी हो जैसा आज है। वे चाहते थे कि कल का इंतजाम कर ले। यदि कुछ हो गया तो, कहीं परमेश्वर अगली सुबह चमत्कार करना भूल गये तो, परन्तु परमेश्वर ने उन्हे मना किया था कि हर दिन की ज़रुरत से ज्यादा इकट्ठा न करें, सिवाय विश्राम दिन के। और यदि एक दिन जिने के लिये जो काफी है, उससे ज्यादा उन्होने इक्ट्ठा किया, तो बचाया हुआ सड़ जाता

कुछ देर रुक कर इस पर सोचिये। ये बहुत ही प्रभावशाली उदाहरण है जिसे हम आज अपने जीवन पर लागू कर सकते है। जब आप तर्क करते है, चिंता और चिढ़चिढ़े रहते हैं, क्या आप कल के लिये मन्ना संग्रह करने की कोशिश कर रहे हैं। आपके परम पिता जो स्वर्ग में है वे चाहते है कि आप कल के लिये उस पर विश्वास रखें! नीतिवचन 3:5 (विस्तारित बाइबल) में लिखा है तू अपनी समझ का सहारा न लेना, वरन सम्पूर्ण मन से यहोवा पर भरोसा रखना।

मैंने एक बार निम्नलिखित वर्णन पढ़ा। दो व्यक्ति यीशु मसीह पर अपनी गवाही देने के जुर्म में जेल में थे। अगले दिन सुबह उन्हे

अग्निदण्ड में जलाया जाना था। उनमें से एक वृध्द संत था जिसे परमेश्वर के कार्यों में काफी अनुभव था। दूसरा व्यक्ति एक नौजवान था जो प्रभु से अत्यधिक प्रेम करता था, परन्तु प्रभु के कार्यों का उसे ज्यादा अनुभव न था।

जैसे शाम ढली नौजवान व्यक्ति ने मोमबत्ती जलाने के लिये दियासलाई जलाई, और कमरे में अंधेरा हो रहा था, इसी प्रक्रिया में उसने अपनी उंगली जला ली। वह बहुत बेचैन होने लगा और भयभीत हो कर चिल्लाने लगा कहता हुआ, "यदि अपनी उंलगी जलने पर इतनी पीड़ा हो तो मैं कभी भी खड़ा होकर अग्निदण्ड में जलाये जाना सह नही सकुँगा।" वृद्ध संत ने इन शब्दों द्वारा उसे दिलासा दिया, "बेटा, प्रभु ने तुमसे उंगली जलाने को नही कहा था, इसलिये इसके लिये तुम्हे अनुग्रहित नही किया। वह तुमसे अपने जीवन का बलिदान देने को कह रहे हैं और तुम यकीन जानो जब सुबह होगी, तब तुम्हे जो करने की ज़रुरत है उसके लिये अनुग्रह प्राप्त होगा।"

देखा आपने, उस वृद्ध और अनुभवी संत को सालों प्रभु के साथ चलने से यह मालूम था कि हर हाल में जब सुबह आयेगी, परमेश्वर का अनुग्रह वहां होगा। इसलिये, वह आज में संतुष्ट था, क्योंकि उसे आज में विश्वास था, कि कल वो सक्षमता (अनुग्रह) वहाँ होगा ही।

आप इस मिसाल से देख सकते हैं कि विश्वास हमें तर्क से मुक्त करता है। विश्वास भविष्य को जानने को बाध्य नहीं। विश्वास विश्राम पाता है क्योंकि उसे पता है कि परमेश्वर कल का मन्ना कल भिजवायेंगे ही। मैं सचमुच आपको प्रोत्साहित करुँगी अपना आज न गवाये ये समझने की कोशिश में (तर्क में) कि अतीत में क्या हुआ या भविष्य में क्या होने वाला है।

जैसा मैने कभी पढ़ा था: बीता कल एक रद्द किये हुये चेक की तरह है, आगामी कल एक वचन पत्र के समान है और आज ही वो नगद पैसा है जो आपके पास है। उसे अकलमंदी से इस्तेमाल करें।

5

यदि केवल

प्रेरित पौलुस फिलिप्पियों में हमें सिखाते हैं कि जो अतीत में रखा है उसे हमें छोड़ना होगा और उस ओर बढ़ना है जो आगे है। (फिलिप्पियों 3:13) आप किस तरह अतीत को चिपके रह सकते है यदि विचारों द्वारा नहीं? मेरा मानना है कि हम अपने मन में अतीत के पहियों को घुमा सकते हैं और हमें यही उर्जा अपने आज के लिये इस्तेमाल करनी है।

क्या आप कभी अतीत की गलतियों को बार बार दोहराते हैं? क्या आप कभी सोचते हैं? "मैं ऐसा क्यों किया?" और ओह, "यदि केवल मैने ऐसा ऐसा किया होता" सावधान रहिये इस 'यदि केवल' से।

शायद आपने सोचा हो कि आप सब बातें वैसे ही कर रहे हैं जैसा उन्हे करने की ज़रुरत है और फिर भी बातें बिगड़ रही है। आप शायद हैरान हो, "ये हालात ऐसे कैसे हो गये जैसे हो गये हैं? क्यों प्रभु क्यों? मुझे बस समझ नही आता, मुझे इसका पता लगाना पड़ेगा, मैं इसे जाने बगैर नही रह सकती। ओह! मैं, इतनी उलझ गई हूँ!"

क्या आपकी सोच ऐसी लगती है? क्या मैं साफ कह दूँ? "आप स्वयं पर अत्याचार कर रहे हैं" मैंने ऐसा करते सालों बिता दिये इससे कोई फायदा नहीं! अतीत में बहुत सी बातें थी और है जिन्हे मैं न समझी और अभी तक समझ नही पा रही; परन्तु मैं परमेश्वर का धन्यवाद करती हूँ कि अखिरकार उन्होने मुझ तक अपना संदेश पहुँचा दिया कि जो पीछे छूट गया उसे मुझे भूलना होगा और आगे की बातों की ओर आगे बढ़ना होगा। अब मुझे बहुत सारी शांति मिलती है।

वचन में यशायाह 26:3 में लिखा है, "जिसका मन तुझ में धीरज धरे हुये है उसकी तू पूर्ण शांति में रक्षा करता है।" इसमें ऐसा नहीं लिखा कि जिसका मन तर्क में और हर बात जानने की कोशिश में व्यस्त है उसकी पूर्ण शांति से रक्षा होगी।

वैसे तो बहुत सी अनुचित और अन्याय वाली बातें होती हैं। मेरे अतीत में भी, और शायद आपके में भी हुई हो, मेरे साथ बहुत सी बातें हुई जो अनुचित थी। जिनसे मुझे बहुत सी समस्यायें हुई, चोट लगी और दुख पहुँचा जिन्हे भूलने को कई साल लग गये।

मैने कई साल बिता दिये आत्मदया में और अपने मन में कढुवाहट लिये-हमेशा क्रोध और गुस्से में ये कारण जानने की कोशिश करते हुये कि मेरे साथ ऐसा क्यों हुआ। परमेश्वर ने मेरी सहायता क्यों नही की? किसी ने मेरी सहायता क्यो न की?

मैने अंत में जाना कि मैं स्वयं को ही दुखी कर रही थी। मैं अपने सारे आज व्यर्थ गंवा रही थी अपने बीते कलो को समझने में, एक दिन परमेश्वर ने मुझसे कहा, "जॉयस, तुम या तो दयनीय हो सकती या शाक्तिशाली। तुम क्या चाहती हो?"

कभी कभी शायद आप अतीत की विजयों में जीयें। आप इसी में उलझ कर रह सकतें है, वो बात समझने की कोशिश करते हुये कि आपने क्या किया जिससे सफलता मिली, ताकि आप इसे दुबारा कर सकें। मैं मन ही मन अपनी अतीत की विजयों पर इतराती रहती। ये भी आपको आगे बढ़ने से रोक सकता है। अतीत तो अतीत है। चाहे अतीत में विजय हो या पराजय, ये फिर भी अतीत ही रहेगा। ये बीत गया है। आज जीओ!

खुशनुमा यादों में कोई हर्ज नहीं, पर ये गलती है, और एक बडी गलती कि बीती विजयों में जीये जायें। अपने जीवन की हर घटना के बाद, पर्दे को अपने पावं पर गिर जाने दो जब आप उस बात को छोड़ कर उस अगली बात की ओर बढ़ते है। फिलिप्पियों 3:13 मैं, "...जो बातें पीछे रह गई हैं उनको भूल कर, आगे की बातों की ओर बढ़ता हुआ।"

मैं दुबारा आपके लिये दोहराना चाहती हूँ कि "यदि केवल" से सावधान रहें। यदि कुछ बुरा हो तो हम सोच सकते हैं, 'यदि केवल' मैने यह कार्य ऐसे न किया होता। यदि कोई अच्छी बात होती है, हमें ये सोचते पाया जा सकता है "यदि केवल" मैं इसे दुबारा कर सकती।

अतीत भूल जाओ! इसे और समझने की कोशिश न करो। अब एक फैसला करो आगे बढ़ने का।

6

क्या हो यदि?

एक और मानसिक तीर (बाइबल इफिसियों 6:16, में उन्हें जलते हुये तीर कहती है) जो शैतान हम पर चलाता है वो है भय उत्पन्न करने वाला ब्यान, क्या हो यदि!

क्या हो यदि पैसा न आया? क्या हो यदि हमें ठेस पहुँचें? क्या होगा यदि तुम बहुत बिमार पड़ गये? क्या होगा यदि तुम्हारी नौकरी छूट जाये? क्या होगा यदि जीवन भर आप अकेले रह गये? या, ये कैसा रहेगा, क्या होगा यदि तुमसे परमेश्वर ने बात न की? क्या होगा यदि तुमने कोई गलती की? क्या होगा यदि तुम असफल रहे? क्या होगा यदि वे तुमपे हंसे? क्या होगा यदि तुम नकार दिये गये? और इसी तरह सूची बढ़ती जाती है। क्या आप विचारों की ये रुप रेखा पहचान सकते हैं?

ये 'क्या होगा यदि' एक और प्रकार है जब हम तर्क द्वारा हर बात समझने और जानने की कोशिश करते हैं। "क्या होगा यदि" विचार आता है जो अकसर उन विचारों की कड़ी बन जाता है जो काफी निराशाजनक तस्वीर पेश करते हैं। 'क्या होगा यदि' हमें भविष्य में ले

जाता है। और हमें मजबूर करता है कि उन बातों से डरें जो अभी हुई ही नही और शायद कभी हों भी न जब तक कि हम भय द्वारा उनका निर्माण न करें।

"क्या होगा यदि" वैसी ही गड़बड़ी पैदा करता है जैसी 'यदि केवल' से है। ये दोनों उसी प्रकार की सोच है, जिसमें हमें नहीं पड़ना। बेशक ये दोनों 2 कुरिन्थियों 10 में दिये गये हैं हर उँची बात और कल्पना के अंतर्गत, (विस्तारित बाईबल) और 'कल्पनायें', इन सभी को हमें त्यागना है।

मेरे कहने का क्या मतलब है आईये मैं आपको एक व्यवहारिक उदाहरण दूँः एक समय था, हमारी सेवकाई को एक इमारत की ज़रुरत थी जहाँ हम अपनी साप्ताहिक सभायें कर सकते। जिस इमारत में हम पाँच साल से ज़्यादा अर्से से मिला करते थे, उसे लगभग दो साल के भीतर ढा दिया जाना था, और उसकी जगह एक शॉपिंग सेंटर बनने वाला था। हम ऐसी जगह ढूंढ रहे थे जहाँ हमारे आफिस हो सकते और हमारी साप्ताहिक सभायें होते हुये भी इतनी जगह बचती कि हम नर्सरी बना सकते, बाल सेवकाई और विकास के लिये स्थान रहता वगौरा वगौरा। हमें पार्किंग के लिये भी 300 जगहें चाहिये थीं।

अब, कोई सोचेगा कि ये ढूँढना कोई मुश्किल काम तो नहीं; हालांकि ये इतना आसान भी नहीं था, जितना आप सोचते है; हम दो साल तक ढूँढते रहे। हर संभावना जो हम जानते थे हम खत्म कर चुके थे। ऐसा सचमुच लगता था कि हम अंधी गली में आ गये हैं।

शैतान ने जलते हुये तीर फेंके जैसेः "क्या होगा यदि दो साल बीत गये और तुम्हे फिर भी जगह न मिली?" या एक जलता हुआ

तीर आया जिसके साथ ये संदेश था: यदि केवल तुमने फ्लां फ्लां सम्पति खरीदी होती जब वह सस्ते में मिल रही थी, तो तुम इस स्थिती में न होते। 'क्या होगा यदि' तुम परमेश्वर को न पा सके, यदि केवल तुम्हे इस तरह की बातों का और पता होता, तब तुम जानती शायद कि क्या किया जाये। क्या हो यदि तुम कोई सम्पति खरीद लो लेकिन फिर परमिट न मिले जो ज़रुरी है? क्या हो यदि तुम कुछ खरीद लो और फिर तुम्हे कुछ और मिले जो इससे ज़्यादा बेहतर हो और बेहतर कीमत पर मिले?

मैं अकसर परमेश्वर का धन्यवाद करती हूँ कि मैं तर्क की कैद से मुक्त हुई इससे पहले कि इमारत का मसला हमारे सामने आया। यदि यही परिस्थिति कुछ साल पहले आई होती, तो मैने सचमुच स्वयं को बहुत दुखी कर लिया होता, उलझनग्रस्त और भयभीत होती इन सब बातों का विशलेषण करते हुये।

अब मैं इस बात पर विश्वास करते योग्य हुई हूँ कि हमारे कदम परमेश्वर की आज्ञा से उठते हैं (भजन संहिता 37:23) हम प्रार्थना कर रहें हैं और परमेश्वर पर भरोसा कर रहे हैं, और उसकी इच्छा चाहते हैं। इसलिये, वह हमें सही समय पर सही स्थान पर पहुँचा देंगे। अकसर परमेश्वर, ज़्यादा शीध्रता नही करते, पर वह देरी भी नही करते। हमने बहुत से सौदों को कारगर बनाने की कोशिश पे कोशिश की थी अतीत में, पर वे थे कि हल हो ही नही पाते थे, चाहे हम कितनी भी कोशिश क्यों न कर लेते। फिर भी, सही समय पर परमेश्वर ने हमें एक बहुत शानदार जगह किराये पर दिलवाई, और वह हर कदम पर हमें हमेशा देते ही रहेंगे।

अब मैं विभिन्न हालातों पर गौर कर सकती हूँ, और देख सकती हूँ कि वे क्यों सही न होते। पर उस समय, तो ऐसा लगता था, कि मैं

जगह ढूँढने की इतनी कड़ी कोशिश कर रही हूँ और कुछ बन नहीं पा रहा है। कुछ भी नही बनेगा जब हम परमेश्वर की समय सीमा से बाहर कुछ कर डालने की कोशिश कर रहे हों।

परमेश्वर सचमुच ये जानते है, कि वह क्या कर रहे है। वह सचमुच नियंत्रण रखे हैं। मैं ये सोच कर आश्वस्त हो सकती हूँ, चाहे मुझे ये पता न हो कि मैं क्या करने वाली हूँ, मुझे ये ज़रुर पता है कि मैं उसे जानती हूँ, जिसे ये मालूम है।

आप क्या कहते हैं? क्या आप यीशु को जानते हैं? फिर आप सर्वज्ञाता, सर्वशक्तिमान, सर्वव्यापी परमेश्वर को भी जानते है... वो जो सबसे शक्तिशाली है, सब जानता है और हर समय हर जगह हैं।

शांत! क्या हो यदि आप समझने की लाख कोशिश करते हैं, अंत में आप सोचते हैं कि आपने सब पता लगा लिया है, और परमेश्वर आपको चकित कर देते है और वह कार्य बिल्कुल अलग तरीके से कर डालते हैं? फिर वो सारा समय व्यर्थ ही गवांया। क्या आपने तर्क और गड़बड़ी में काफी समय गवां नही दिया?

एक सुझाव है: *क्या हो यदि आप बस आश्वस्त हो जायें और परमेश्वर को परमेश्वर रहने दें?*

7

अपने दिमाग के पीछे मत जाओ

मैं प्रार्थना कर रही थी मेरे जीवन में ज़्यादा से ज़्यादा विवेक का इस्तेमाल हो सके। दरअसल, मैं इस बारे में काफी देर से प्रार्थना कर रही थी जब पवित्र आत्मा ने मुझे बताया "तुम कभी भी विवेक के अधीन काम नही कर सकती जॉयस, जब तक कि तुम तर्क को एक ओर न रख दो।"

पहला कुरिन्थियों 1:14-16 हमें साफ साफ बताता है कि शारीरिक मनुष्य कभी भी आत्मिक मनुष्य को समझ नहीं सकता। परमेश्वर ने अपना आश्य समझाने के लिए इस शास्त्र वचन का इस्तेमाल किया है। यदि मेरी आत्मा कोई विश्लेषण करती है तो मेरा दिमाग तर्क करता है कि इसका कोई मतलब भी है या नहीं, मैं कोई भी प्रगति नहीं कर पाती, क्यों? क्यों कि जो 1 कुरिन्थियों 2:14 में लिखा है वो है शारीरिक मनुष्य परमेश्वर के आत्मा की बातें ग्रहण नहीं करता क्योंकि वे उसकी दृष्टि में मूर्खता की बातें है, और न वह उन्हे जान सकता है

क्योंकि उनकी जांच आत्मिक रीति से होती है। आपकी आत्मा वे बातें जानती है जो आपका दिमाग नही जानता।

यदि आप परमेश्वर के नये सिरे से जन्मे पुत्र हैं तब पवित्र आत्मा आपके शारीरिक आत्मा में बास करता है। मेरा मानना है कि पवित्र आत्मा हमें बहुत सी बातें बताता है, जो हम नकार देते हैं क्योंकि हम शारिरिक आत्मा के अनुसार ज़्यादा काम करते हैं।

मैं आपको एक उदाहरण देती हूँ एक सुबह मैं अपनी साप्ताहिक "लाईफ इन द वर्ड" की सभा में जाने के लिये तैयार हो रही थी, मैं एक महिला के बारे में सोचने लगी जो हमारी सहायता सेवकाई चला रही थी, उस खास सभा में और ये कि वह कितनी वफादार थी। मेरे मन में एक इच्छा जागी कि उसके लिये कुछ करुँ किसी तरह उसे आशीष दूँ।

मैने कहा, "प्रभु, मैं रुथ ऐन के लिये क्या करुँ?" मुझे एक शक्तिशाली प्रभाव महसूस हुआ, या आप कह सकते हैं कि मुझे बस पता था, कि मैं उसे अपनी नई लाल ड्रेस दूँगी जो मेरी अलमारी में लटकी है। मैने तीन महीने पहले वो ड्रेस खरीदी थी, हालांकि मुझे वो सचमुच बहुत पसंद थी जब भी मैने उसे पहनने का सोचा, मुझे उसे पहनने की इच्छा ही नही हुई। वे अभी भी उस स्टोर से लाये प्लास्टिक के थैले में लटकी थी और सभी लेबल भी ज्यों के त्यों लगे थे। रुथ ऐन मुझ से ज़रा मोटी थी और हैरानी की बात ये है कि मैं अकसर जो साईज में पहनती हूँ उससे एक साईज बड़ा लिया था, क्योंकि उसके पास मेरे साईज का ड्रेस नही था, क्योंकि जिस तरह वे ड्रेस डिजाईन किया गया था मुझे नहीं लगा कि किसी को पता लग पायेगा कि वह मेरे लिये थोड़ा बड़ा था।

खैर, जब मेरी आत्मा में ये तीव्र इच्छा उठी कि उसे ये ड्रेस दे दूँ, तो मेरे दिमाग ने कहा, "पर प्रभु, वो ड्रेस नई है।" गौर किया कि कैसे मेरा दिमाग, मेरा शारीरिक मनुष्य मेरी आत्मा से बहस करता है. तो बहस का कोई मतलब ही नही निकलता। फिर मैने कहा, "बेशक आप ये तो नही कह रहे कि मैं वो ड्रेस दे दूँ जो बिल्कुल नई है।" दरअसल,यदि मैनें परमेश्वर के स्वभाव, उनकी दयालुता और उनकी उत्कृष्टता का सोचा होता तो मुझे पता होता कि परमेश्वर यही कहेंगे कि वे ड्रेस दे दो जो बिल्कुल नई है बजाय इसके कि जो घिसी पटी हो।

राजा दाऊद 2 शमुएल 24:24 में कहते हैं (विस्तारित बाइबल) एक मंदिर के निर्माण के बारे में "मैं अपने परमेश्वर यहोवा को सेतमेत के होमवलि नहीं चढ़ाने का।" देखा, हमारा शरीर उससे जुदा होने का बुरा नही मानता जिस चीज़ का हमारे लिये 'कुछ' महत्व नहीं, फिर भी नई ड्रेस एक अलग कहानी है। उसे देने के लिये मुझे त्याग करना पड़ा।

मेरी अंतिम बहस सचमुच बहुत अजीब थी मैंने कहा, "प्रभु मैंनें, मैने इनके साथ मेल खाती खूबसूरत लाल बालियां भी खरीदी हैं।" मैंने ये बहुत सुस्त आत्मग्लानि के लहजे में कहा। मुझे लगा मुझे उम्मीद थी कि शायद प्रभु मुझ पर तरस खायेंगे। उनका जवाब मेरे पहले दो तर्कों के लिये बिल्कुल खामोशी था और मेरे तीसरे तर्क जिसमें मैने बालियों का हवाला दिया था। उन्होने मुझे जता दिया कि मुझे उसे बालियां भी दे देनी चाहिये अगर उन्हे रखना कोई समस्या है तो।

परमेश्वर हमसे बहस नही करते। वह हमे बताते हैं किसी इच्छा द्वारा, जानकारी द्वारा या आपकी आत्मा पर किसी प्रभाव द्वारा, कुछ

ठहरा सा छोटी सी आवाज, कई बार सुनाई देने वाली आवाज़ या ज़्यादातर तो शास्त्र वचन जो हमारे लिये रौशन हो जाता है। याद रखिये परमेश्वर अपनी इच्छा के बाहर आपको कुछ भी नहीं करवायेंगे, इच्छा है उनका वचन। और हाँ, आवाज़ों के पीछे चलने से सावधान रहें। बहुत तरह की आवाज़ें हैं; इस बात का ध्यान रखें कि आपकी आत्मा पवित्र आत्मा की गवाही दें।

मेरी आत्मा ने गवाही दी कि रुथ ऐन को ड्रेस मिले। पर मेरा शरीर उसे छोड़ना नहीं चाहता था। इसलिये मैं परमेश्वर का तर्क देती गई कि क्यों इसका कोई मतलब नही। पर परमेश्वर ने मुझसे बहस नहीं की उन्होने वो कह दिया जो उन्हे कहना था। यदि आप याद करें कि शुरुआत में क्या हो रहा था, मैं रुथ ऐन के बारे में सोच रही थी कि वह कितनी बड़ी आशीष है, और मैने परमेश्वर को पूछा कि मैं उसके लिये क्या करुँ? उन्होने मुझे बताया, पर मेरा दिमाग (तर्क) इसे पसंद नही कर रहा था जबकि मेरी आत्मा ये जानती थी कि ये सही है। अब ये मेरे ऊपर था कि फैसला करुँ।

खैर, मैंने फैसला टाल दिया, ये हमारा मन पसंद तरीका है उस बात को टालने का जो परमेश्वर हमसे करने का कह रहे हैं बिना सीधे आज्ञा तोड़ने के या ऐसा हम सोचते हैं दरअसल टाल मटोल भी आज्ञा न मानना है। अच्छी नीयत आज्ञा मानना नही। परमेश्वर के वचन अनुसार कार्य करना ही आज्ञा मानना है।

कुछ सप्ताह गुज़र गये और मैं ये घटना ही भूल गई, पर परमेश्वर नही भूले। मैं रुथ ऐन के लिये प्रार्थना कर रही थी और मैंने दुबारा उनसे यही बात फिर सचमुच फिर से कही: "प्रभु, मैं रुथ ऐन को कैसे आशीष दूँ?" फिर दुबारा वही हुआ। वही लाल ड्रेस मेरी नज़रों के

सामने उभर आई। मैने अंत में समझ लिया कि मैं आज्ञा नही मान रही थी और उसे लाल ड्रेस दे दी।

दरअसल मैंने महसूस किया उसे दे देने का फैसला करने के बाद, कि देखा जाये तो शुरु से ही मैंने उसे देने के लिये ही खरीदा था, और इसीलिये वे मेरी अलमारी में तीन महीने तक लटकी रही, नई की नई, मैंने उसे बैग से निकाला तक नही। प्रभु, बेशक ये सब बातें बहुत पहले से जानते हैं, पर हम सचमुच आज्ञा न मान कर एक बखेड़ा खड़ा कर सकते हैं। ये सब गड़बड़ी तब पैदा होती जब शारीरिक मनुष्य आत्मिक मनुष्य को समझ नही पाता जिसके बारे में 1 कुरिन्थियों 2 बताता है।

"क्यों प्रभु क्यों?" शारीरिक मनुष्य कहता है "आप मुझसे बलिदान करवाना क्यों चाहते हैं? ये आसान क्यों नहीं हो सकता? ये इतना कठिन क्यों होना चाहिये?" रोमियों 8:6 (विस्तारित) में लिखा है कि शरीर का मन है पवित्र आत्मा रहित सोच और तर्क। ये ऐसा विचार भी व्यक्त करता है कि इस प्रकार के व्यवहार से शांति नहीं मिलती।

हाँ यदि, आपने इस पुस्तक के मुख्य उद्देश्य को नज़रअंदाज कर दिया है तो मैं आपको याद दिला दूँ कि मैं ये तर्क रखने की कोशिश कर रही हूँ कि "क्यों प्रभु क्यों" उन बातों में से एक है जो हमारी गड़बड़ी का कारण बन हमारी शांति छीन लेती है। अंत में हमारा आनंद भी।

क्या आप जीवन का आनंद लेना चाहते हैं? तब 'तर्क' को जाना होगा।

8

"तर्क" छलता है

छले न जाने की आज कल केवल एक ही उम्मीद है, कि आत्मा के संग चलना सीखो, आत्मा का अनुसरण करो, शरीर का नही। शैतान ऐसे शरीरी मसीहिंयों की खोज में है जो अपने दिमाग का अनुसरण करते हैं, अपनी भावनाओं और अपनी इच्छाओं के पीछे चलते है बजाय वचन और आत्मा के। हम कार्य नहीं करते क्योंकि या तो हमारा मन करता है या नही करता। हमें करना पड़ेगा, स्वर्ग के राज्य की खातिर और अपनी सुरक्षा की खातिर, ऐसे कदम उठायें जो पवित्र आत्मा का अनुसरण करें।

मन हर बात की जगह बना लेता है। वे कोई जगह पाना चाहता है जहाँ सब कुछ खांचे में रख सकें ताकि इसका कोई मतलब निकल सके और इससे निपटा जा सके। हमें अनुतरित प्रश्न पसंद नही। एक शस्त्र जो आत्मा हमारे शरीर को क्रूस देने के लिये इस्तेमाल करती है वह है अनुत्तरित प्रश्न। जब हमे जवाब मालूम न हो तो या तो हमें परमेश्वर पर भरोसा करना पड़ता है या चिंता करना और उसका पता लगाने की कोशिश करना।

पवित्र आत्मा का काम होता है कि विश्वासी को परिपक्वता (सिध्दता) के उस मुकाम तक लाये, यीशु द्वारा उद्धार पा लेने के बाद वह विश्वासी जो पिता पर विश्वास करता है उस समय जब बातें समझ न आये। वही सिद्ध विश्वासी है। इसलिये परमेश्वर हमेशा हमें हमारे प्रश्नों का उत्तर नही देते क्योंकि वह हमें विश्वास में प्रशिक्षित कर रहे हैं। फिर भी, आपको याद रखना चाहिये, आपका मन परमेश्वर की इस पूरी योजना के पूरी तरह विरोध में है। आपका मन स्वाभाविक है और शरीर का अंग माना जाता है जब तक यह नया नहीं हो जाता और आत्मा में सोचना नही शुरु करता।

रोमियों 4 हमें शरीर के मन और आत्मा के मन के बारे में बताता है। गलातियों 5:17 (विस्तारित) में लिखा है कि शरीर आत्मा के विरोध में, और आत्मा शरीर के विरोध में लालसा करती है, और ये एक दूसरे के विरोधी हैं।

चलिये हम अपने असली विचार की ओर वापस जायें जो इस अध्याय के शुरु में था। शारीरिक मन हर बात को कही किसी खांचे में डाल देना चाहता है और इसे किसी छोटे से डिब्बे में रख देना चाहता है जहाँ वो बस हो जाये और हमें बिना ज्ञान के न छोड़े।

हमारे आफिस में कभी डाक के डब्बों की एक लम्बी कतार थी। हर एक के ऊपर कर्मचारी का नाम लिखा रहता। जब मुझे किसी कर्मचारी को कोई निर्देश या संदेश देना होता मैं इस डाक के डब्बे में एक नोट लिख कर डाल देती। कभी ऐसा होता कि मैंने किसी कर्मचारी को कुछ करने के लिये कहा और वे काम नहीं हुआ, और जांच करने के बाद पता चलता कि मैने गलत खांचे में नोट डाल दिया था। कई बार मैंने इसे खाली खांचे में डाला होता जिस पर किसी का नाम नहीं लिखा होता।

प्रभु ने डाक के ये खांचे इस्तेमाल किये मुझे वो सबक सिखाने के लिये जो मैं आपको सिखाने की कोशिश कर रही हूँ। उन्होने मुझे सिखाया कि जैसे मैनें अपने आफिस में गलत खांचे में चीज़े डाल दी उसी तरह कई बार मैं अपने दिमाग के गलत चीज़े खांचे में डाल देती हूँ। मैं हमेशा चाहती थी हर बात को अपनी सोच में कहीं डाल लूँ ताकि एक छोटा सा सुधरा सा पैकेट बना लूँ जिसमें कुछ बिखरा न हो, जो मुझे महसूस हो रहा था। प्रभु पर विश्वास करने में मेरी एक बहुत बड़ी समस्या थी 'तर्क'। मैं अकसर पूछती 'क्यों प्रभु क्यों'? इसलिये मैं बहुत गड़बड़ी में रहती और चिंता और शांति का अभाव और बिना आनंद के।

मैं कई बार स्वयं को छला करती, प्रभु नें मुझे दिखाया, क्योंकि कई बार मैंने सोचा कि कुछ मसलों का मैंने पता लगा लिया है और मैं कोई कदम उठाने वाली थी या न उठानेवाली थी उसके अनुसार जो मैं सोचती थी, मुझे बाद में पता चलता, जब मैं सब कुछ बिगाड़ लेती, चाहे मुझे लगता था कि मुझे पता है या मैं समझ चुकी हूँ या मैने सब पता लगा लिया है लेकिन मैंने इसे गलत खांचे में डाल रखा था।

परमेश्वर ने नीतिवचन 3:7 का इस्तेमाल किया इस सच्चाई को मुझे समझाने के लिये "अपनी दृष्टी में बुद्धिमान न होना।" परमेश्वर ने मुझे बता दिया कि जैसा मैं खुद को समझती थी उससे आधी होशियारी मुझ में नहीं थी। मैं मानसिक बुद्धिमता की बात नहीं कर रही। मैं बात कर रही हूँ हमारे अपने बारे में अपनी राय की। हम सब बातों का पता लगा चुके हैं।

नीतिवचन 3:5,6 में लिखा है:

> "तू अपनी समझ का सहारा न लेना, वरन अपने संपूर्ण मन से यहोवा पर भरोसा रखना। उसी का स्मरण करके सब काम करना, तब वह तेरे लिये सीधा मार्ग निकालेगा।"

जब परमेश्वर इसे सरल बनाते हैं तो आप गड़बड़ी या शंका में नहीं रह पाते, पर यदि तुम तर्क करो और पता लगाते की कोशिश करो, तो शायद आप चक्कर काटते रह जायें और कभी सच्चाई न जान पायें। वचन 7 में लिखा है, "अपनी दृष्टी में बुद्धिमान न होना"!

यहाँ स्थिती से जूझने के दो उपाय हैं एक जो सही है और दूसरा सही नहीं है, एक आत्मिक है दूसरा शारीरिक। चलो मान लें कि कोई मुझे निजी भविष्यवाणी से अवगत कराता है जो मुझे वास्तव में समझ नहीं आती। या यूँ कहें कि मुझे आध्यात्मिक सपना आता है, जो मेरी समझ में नहीं आता है। मैं पिता के पास जाकर कह सकती हूँ, "पिता, मुझे ये समझ नहीं आ रहा। मैं ये समझना चाहती हूँ, इसलिये मैं आपसे मांगती हूँ कि मुझे बोध करायें, मुझे समझ दें।"

फिर वो बात या चीज़ जो मुझे समझ नही आती, एक ताक पर रख देती हूँ। दूसरे शब्दों में इसके बारे में फिर कभी नहीं सोचती मैं इसे परमेश्वर के हाथ सौंप देती हूँ। यदि और जब भी वह इसकी समझ मुझे देने को तैयार होंगे, वह इसे ताक से उतारेंगे और मेरी स्मृति में इसे वापस ले आयेंगे। युहन्ना 14:26 में लिखा है, "पवित्र आत्मा तुम्हें सब बातें सिखायेगा।" जो कुछ मैंने तुमसे कहा है, वह सब तुम्हे स्मरण करायेगा।

दूसरी तरह जिससे मैं स्थिति से निपट सकूँ वो ये कि यदि मुझे कोई सपना या भविष्यवाणी समझ न आये, तो मैं इसे समझ लेने और उसका पता लगाने की सचमुच कोशिश करुँ। मैं बहुत से लोगों से इस बारे में बात कर सकती हूँ, और उनकी राय ले सकती हूँ, मैं ये भी बता दू किं उनमें से ज्यादातर की राय अलग ही होगी, तो ये मेरी उलझन और भी बढ़ा देगा। फिर, जब मैं सब बातों का पता लगा लूँगी, मैं कोई कदम उठाना, शुरु करुँगी। पर सच, यदि मैं स्वयं से

सच्ची और ईमानदार रहूँ तो मुझे कहना पड़ेगा कि मेरे भीतर शांति नहीं है। यदि मैं कुछ करने की कोशिश में लगी रही उस पर अधारित जो मैंने सोचा इस सपने, भविष्यवाणी या दृश्य के बारे में तो मैं अंत में एक बहुत बड़ी गड़बड़ी करके ही रहूँगी।

याद कीजिये, तर्क से गड़बड़ी होती है। मैं ये नहीं कहती कि हम मसलों पर सोचें ही न, पर इसमें अंतर है कि किसी चीज़ पर लम्बे अर्से तक ध्यान लगाना ये देखने को कि क्या आप समझ पाते हैं इसे, और पता लगाने की इतनी कोशिश करना कि आप पूरी तरह उलझ जायें।

जब आप गड़बड़ी में स्वयं को महसूस करें, तो इसे चेतावनी का संकेत समझें कि हम किसी बात से गलत ढ़ंग से निपट रहे हैं।

9

गड़बड़ी आपका आनंद छीन लेती है

इस अंतिम अध्याय में, मुझे ये साबित करने दें कि गड़बड़ी परमेश्वर की ओर से नहीं, पहला कुरिन्थियों 14:33 कहता है, "परमेश्वर गड़बड़ी का कर्ता नहीं," कुलुस्सियों 3:15 (विस्तारित) में लिखा है कि शांति तुम्हारे हृदय में राज्य करें वही तुम्हारे जीवन के निर्णय करें। शांति, जब निर्णायक बनती है तो वही बताती है कि क्या रखना और क्या निकाल देना है।

गड़बड़ी शांती के बिल्कुल उलट है, 'गड़बड़ी' का मतलब है सब कुछ इकट्ठा गडमड हो जाना, अपवित्र, उलझा हुआ, एक चीज़ का दूसरे के लिये धोका होना या धुंधलापन। शांति का मतलब है व्यवस्था, बिना छेड़छाड़ के, भीतरी संतुष्टी, सौम्यता। यदि किसी व्यक्ति के पास शांति नही तो वह पुरुष या महिला आनंद भी न पायेंगे। यीशु नें युहन्ना 10:10 में कहा (विस्तारित) चोर चोरी करने और घात करने और नष्ट करने को आता है। मैं इसलिये आया कि वे जीवन पायें और बहुतायत से पायें।

कुछ वर्ष पहले मैंने फैसला किया कि मैं परमेश्वर का और जीवन का आनंद लूँगी। यदि यीशु मेरे लिये इसलिये मरे कि मुझे न केवल जीवन मिले परंतु इसका आनंद भी मिले, फिर मुझे इसका आनंद उठाने का प्रयास करना चाहिये।

युहन्ना 15 में वर्णन है कि यीशु ने कैसे आज्ञाकारिता का जीवन जीना सिखाया, जिसमें जिक्र है कि परमेश्वर के विश्राम में प्रवेश। वचन 1-10, उस आज्ञाकारिता के जीवन के बारे में बताते हैं, फिर वचन 11 (विस्तारित) में, कहते हैं,

> "मैंने ये बातें तुमसे इसलिये कही है, कि मेरा आनंद तुम में बना रहे, और तुम्हारा आनंद पूरा हो जाये।"

इससे बेशक यही लगता है कि वह चाहते है कि हम जीवन का आनंद उठायें। गड़बड़ी इस मकसद को पूरा होने से अवश्य रोकती है।

समाप्त करते हुये, मैं आपको प्रोत्साहित करना चाहती हूँ कि आनंद में जीवन जीने का फैसला करें, गड़बड़ी और धबराहट में नही। आपको 'तर्क' छोड़ना होगा। हर बार जब हम आत्मिक विजय प्राप्त करते हैं तो हमें शारीरिक स्वभाव का कुँछ त्यागना पड़ता है। शरीर का स्वभाव ही है "कि हर बात का पता लगाने की कोशिश करना।" आत्मा का स्वभाव है कि "परमेश्वर पर भरोसा करना कि वह समय आने पर इसका जवाब बता देंगें"

यदि आप 'तर्क' का त्याग करते हैं तो मुझे सचमुच विश्वास है कि आप *शांति* और *आनंद* की फसल काटेंगे।

एक नये जीवन का अनुभव

यदि आपने यीशु को कभी अपना प्रभु और उद्धारकर्ता बनने के लिये आमंत्रित नहीं किया, तो मैं आपको आमंत्रित करती हूँ कि अभी ऐसा करे: आप यह प्रार्थना कर सकते हैं, यदि आप सचमुच इसमें ईमानदार हैं, तो आप मसीह में एक नये जीवन का अनुभव कर सकते हैं।

पिता परमेश्वर, मैं विश्वास करती हूँ कि यीशु मसीह आपके पुत्र है, संसार के उद्धारकर्ता हैं! मैं विश्वास करती हूँ कि वह मेरे लिये क्रूस पर मरे, और उन्होने मेरे सारे पाप ले लिये। वह मेरे स्थान पर नर्क में गये, और मृत्यु और कब्र पर विजय प्राप्त की। मैं विश्वास करती हूँ कि वह मृतकों में से जी उठे और अब आपके दाहिने बैठे हैं। मुझे आपकी ज़रुरत है, यीशु, मेरे पाप क्षमा करें, मेरा उद्धार करें, मेरे भीतर आकर बसें। मैं नये सिरे जन्म होना चाहती हूँ।

अब विश्वास कीजिये कि यीशु आपके हृदय में रहने लगे हैं। आपको क्षमा मिली और आप धर्मी बनाये गये, और जब यीशु आयेंगे आप स्वर्ग जायेंगें।

कोई अच्छी कलीसिया ढूँढिये जो परमेश्वर का वचन सिखाती हो और मसीह में बढ़ना शुरु करें। आपके जीवन में परमेश्वर वचन जाने बिना कुछ नहीं बदलेगा।

प्रिय,

युहन्ना 8:31,32 (विस्तारित) में लिखा है, "यदि तुम मेरे वचन में बने रहोगे तो सचमुच मेरे चेले ठहरोगे और सत्य को जानोगे और सत्य तुम्हे स्वतंत्र करेगा।"

मैं आपको प्रेरित करती हूँ कि परमेश्वर के वचन को थामिये,उसे अपने हृदय में गहरा बो दीजिये, और 2 कुरिन्थियों 3:18 के अनुसार आप जैसे जैसे वचन पढ़ते जाते हैं. आप यीशु मसीह के तेजस्वी रुप में अंश अंश करके बदलते जाते हैं।

सप्रेम,
जॉयस मेयर

लेखिका के बारे में

जॉयस मेयर दुनिया के प्रमुख व्यावहारिक बाइबल शिक्षकों में से एक है। न्यूयॉर्क टाइम्स की यह प्रसिद्ध लेखिका होने के कारण यीशु मसीह के माध्यम से आशा और बहाली पाने में उनकी पुस्तकों ने लाखों लोगों की मदद की है। जॉयस मेयर मिनिस्ट्रीज़ के माध्यम से, वह मन, मुंह, मूड और व्यवहार पर विशेष ध्यान देने के साथ कई विषयों पर शिक्षा देती है। उनकी खरी संचार शैली उन्हे स्वयं के अनुभवों को खेलकर और व्यवहारिक रूप से साझा करने देता है ताकि दूसरे जो कुछ उन्होने सीखा है दूसरे उसे अपने जीवन में लागू कर सकें। जॉयस ने लगभग 100 पुस्तके लिखीं है जिनका 100 भाषाओं में अनुवाद किया गया है। वह हर साल एक दर्जन से अधिक घरेलू और अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन आयोजित करती है और लोगों को अपने प्रतिदिन के जीवन का आनंद उठाना सिखाती हैं। पिछले 30 वर्षों में उनकी वार्षिक महिला सम्मेलन ने दुनिया भर से 200,000 से अधिक महिलाओं को आकर्षित किया है। जॉयस की दुखी लोगों की दर्द करने का मजुनू आशा के हाथ का आधार है जो कि जॉयस मेयर मिनिस्ट्रीज़ का अंग है जो उनके गृहनगर सेंट लुइस सहित दुनिया भर में प्रचार कार्यक्रमों में सहायता देती है।

भ्रम को अलविदा कहें... और आनंद को नमस्ते कहें!

क्या आप भ्रमित हैं? क्या आज आपके जीवन में ऐसा कुछ हो रहा है जो आपको समझ में नहीं आता है? क्या आप सोचते हैं कि आपका जीवन जैसे है वैसे क्यों हैं? क्या आप यह प्रश्न पूछते हुए पाते हैं कि "क्यों, परमेश्वर, क्यों?" इस प्रश्न ने एक बार, सर्वाधिक बिकने वाली पुस्तकों की प्रेरणादायक लेखिका जॉयस मेयर बहुत परेशान किया था जब तक कि उन्होने यह नहीं समझा कि सवाल के जवाब का इंतज़ार उनकी शांति को चुरा लिया था और उनकी खुशी को लूट लिया था। अब आप भी भ्रम की स्थिति को समाप्त कर सकते हैं... और वापस अपने जीवन में खुशियाँ ला सकते हैं। जॉयस मेयर को बताने दें कि कैसे:

- सब कुछ अनुमान लगाने की अपनी दासता समाप्त कीजिये
- एक भरोसेमंद परमेश्वर पर निर्भर होना सीखें
- बीते हुए कल या आने वाले कल के बारे में चिंता करना बंद करें
- अपने मन को देह के फंदे से बचायें और उसे आत्मिक रूप से सोचने के लिए सिखायें

यदि आप पूछ रहे हैं कि क्यों, परमेश्वर, क्यों? तो आप गलत सवाल पूछ रहे हैं। यह अद्भुत, अपरिहार्य किताब परमेश्वर तक रास्ता खोजने और पहले से कहीं अधिक जीवन का आनंद लेने के लिए आपकी मदद करेगी!

JOYCE MEYER MINISTRIES® | Nanakramguda, Hyderabad - 500 008